

श्री अली अनवर अंसारी (बिहार): महोदय, माननीय सदस्य ने जो विषय उठाया है, मैं भी अपने को इससे सम्बद्ध करता हूँ।

श्री आलोक तिवारी (उत्तर प्रदेश): महोदय, माननीय सदस्य ने जो विषय उठाया है, मैं भी अपने को इससे सम्बद्ध करता हूँ।

श्री विशम्भर प्रसाद निषाद (उत्तर प्रदेश): महोदय, माननीय सदस्य ने जो विषय उठाया है, मैं भी अपने को इससे सम्बद्ध करता हूँ।

चौधरी मुनव्वर सलीम (उत्तर प्रदेश): महोदय, माननीय सदस्य ने जो विषय उठाया है, मैं भी अपने को इससे सम्बद्ध करता हूँ।

†چودھری منور سلیم (اُتر پردیش): مہودے، مائنے سدسنے نے جو مذعا اٹھایا ہے، میں بھی اپنے اس سے سمبڈ کرتا ہوں۔

SHRI TAPAN KUMAR SEN (West Bengal): Sir, I too associate myself with the matter raised by the hon. Member and wish to say that ...*(Interruptions)*... it is absolute cronyism which has been operating in the economy. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Yes, names of all those who want to associate with it will be added. Now, Shri Mohd. Ali Khan.

Need for check on private hospitals by Government

श्री मोहम्मद अली खान (आंध्र प्रदेश): सर, आज मैं देश के एक अहम मुद्दे पर आपके तवस्सुत से इस आउस में एक बात रखना चाहता हूँ। देश के अंदर आज जिस माहौल में private multinational hospitals चल रहे हैं, इनको देश के अंदर लाखों, करोड़ों आवाम की सेहत का ख्याल रखने के लिए रखा गया था, लेकिन रियासती सरकार हो या मर्कजी सरकार हो hospital बनाते समय जिस चीज को मद्देनजर रखा जाता है, उसको बालाए-ताक रखकर आवाम की खिदमत करने के बजाए, ये आवाम को प्रोफेशनल तौर पर लूटने का बिजनेस कर रहे हैं। इस देश की चाहे लोक सभा हो या राज्य सभा हो, 2010 में जब के वज़ीरे सेहत आज के लीडर ऑफ दि अपोजिशन गुलाम नबी साहब यूपीए सरकार के वक्त में इस हाउस के अंदर एक कानून लाए थे Clinical Establishment (Registration and Regulation) Act, लेकिन बड़े अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि पांच साल गुजरने के बावजूद भी हिन्दुस्तान की किसी भी रियासत के चीफ मिनिस्टर ने या हिन्दुस्तान की सरकार ने और रियासतों की सरकार ने इसको अमलीजामा पहनाने की कोशिश नहीं की। क्योंकि मेरे साथ हैदराबाद के अंदर यह वाकया हुआ था। मैं वज़ीरे सेहत का बड़ा मशकूर हूँ कि उन्होंने अभी इस पर एक्शन क्रिएट किया है, लेकिन अब इसका सवाल नहीं है। सवाल यह है कि जिस तरीके से बुनियादी उसूलों को बाला-ए-ताक रखकर प्राइवेट हॉस्पिटल्स आवाम के साथ व्यवहार कर रहे हैं, मरकजी सरकार को उसकी जांच करानी चाहिए। यह इसलिए भी होना चाहिए क्योंकि वे उनके ऊपर जरूरी, गैर जरूरी खर्च बनाकर, उनके टैस्ट्स करवाकर, पैसों का बोझ डालते हैं। उनकी ज़िदगी भर की वह कमाई,

चाहे वह सरकारी मुलाज़िम हो, चाहे रियासती मुलाज़िम हो, उसकी उस कमाई का हिस्सा पानے کے लिए प्राइवेट हॉस्पिटल्स इसे लूट का धंधा बनाने की कोशिश कर रहे हैं। मैं मरकज़ी सरकार से चाहूंगा कि जितने भी प्राइवेट हॉस्पिटल्स, जिस दिन से इसमें लगे हैं, रियासती सरकार या मरकज़ी सरकार हो...

† جناب محمد علی خان (آندھرا پردیش) : سر، آج میں دیش کے ایک اہم مدّے پر آپ کے توسط سے اس ہاؤس میں ایک بات رکھنا چاہتا ہوں۔ دیش کے اندر آج جس ماحول میں پرائیویٹ ملٹی-نیشنل ہاسپٹلس چل رہے ہیں، ان کو دیش کے اندر لاکھوں کروڑوں عوام کی صحت کا خیال رکھنے کے لئے رکھا گیا تھا، لیکن ریاستی سرکار ہو یا مرکزی سرکار ہو، ہاسپٹل بناتے وقت جس چیز کو مدّ نظر رکھا جاتا ہے، اس کو بالائے طاق رکھ کر عوام کی خدمت کرنے کے بجائے، یہ عوام کو پروفیشنل طور پر لوٹنے کا بزنس کر رہے ہیں۔ اس دیش کی چاہے لوگ سبھا ہو یا راجیہ سبھا ہو، 2010 میں جبکہ وزیر صحت آج کے لیڈر آف دی اپوزیشن/یوپی۔اے۔ سرکار کے وقت میں اس ہاؤس کے اندر ایک قانون لائے تھے Clinical Establishment (Registration and Regulation) Act، لیکن بڑے افسوس کے ساتھ کہنا پڑتا ہے کہ پانچ سال گزرنے کے باوجود بھی ہندوستان کی کسی ریاست کے چیف منسٹر نے یا ہندوستان کی سرکار نے اور ریاستوں کی سرکار نے اس کو عملی جامہ پہنانے کی کوشش نہیں کی۔

کیوں کہ میرے ساتھ حیدرآباد کے اندر یہ واقعہ ہوا تھا۔ میں وزیر صحت کا بڑا مشکور ہوں کہ انہوں نے ابھی اس پر ایکشن کریٹ کیا ہے، لیکن اب اس کا سوال نہیں ہے۔ سوال یہ ہے کہ جس طریقے سے بنیادی اصولوں کو ^{الفاظ} ~~سلمت~~ رکھ کر پرائیویٹ ہاسپٹل عوام کے ساتھ سلوک کر رہے ہیں، مرکزی سرکار کو اس کی جانچ کرانی چاہیئے۔ یہ اس لیے بھی ہونا چاہیئے کیوں کہ وہ ان کے اوپر ضروری، غیر ضروری خرچ بنا کر، ان کے ٹیسٹ کروا کر، پیسوں کا بوجھ ڈالتے ہیں۔ ان کی زندگی بھر کی وہ کمائی، چاہے وہ سرکاری ملازم ہو، چاہے ریاستی ملازم ہو، اس کی اس کمائی کا حصہ پانے کے لیے پرائیویٹ ہاسپٹل اسے لوٹ کا دھندا بنانے کی کوشش کر رہے ہیں۔ میں مرکزی سرکار سے چاہوں گا کہ جتنے بھی پرائیویٹ اسپتال، جن جن جگہوں پر بھی ہیں، ریاستی سرکار یا مرکزی سرکار ہو۔

† Transliteration in Urdu script.

श्रीमती रजनी पाटिल (महाराष्ट्र): उपसभापति जी, मैं स्वयं को इससे संबद्ध करती हूँ।

श्री महेंद्र सिंह माहरा (उत्तराखंड): उपसभापति जी, मैं भी स्वयं को इससे संबद्ध करता हूँ।

श्रीमती विप्लव ठाकुर (हिमाचल प्रदेश): उपसभापति जी, मैं भी स्वयं को इससे संबद्ध करती हूँ।

श्री शमशेर सिंह डुलो (पंजाब): उपसभापति जी, मैं भी स्वयं को इससे संबद्ध करता हूँ।

डा. विजयलक्ष्मी साधौ (मध्य प्रदेश): उपसभापति जी, मैं भी स्वयं को इससे संबद्ध करता हूँ।

चौधरी मुनव्वर सलीम (उत्तर प्रदेश): उपसभापति जी, मैं भी स्वयं को इससे संबद्ध करता हूँ।

†چودھری منور سلیم (اثر پردیش) : اب سبھا پتی جی، میں بھی خود کو اس سے سمبڈ کرتا ہوں۔

श्री अली अनवर अंसारी (बिहार): उपसभापति जी, मैं भी स्वयं को इससे संबद्ध करता हूँ।

SHRI PALVAI GOVARDHAN REDDY (Telangana): Sir, I associate myself with the Zero Hour mention made by the hon. colleague.

**Lathicharge and atrocities against peacefully agitating students of
Central University at Allahabad**

SHRI TAPAN KUMAR SEN (West Bengal): Mr. Deputy Chairman, Sir, I have a Point of Order. Please let the House be in Order. That is the Point of Order.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: That is a good Point of Order.

SHRI TAPAN KUMAR SEN: Mr. Deputy Chairman, Sir, I think, you have already unwound my clock. Please take the clock back. Sir, my Point is, it appears that the Government of India has declared a war on students of Central Universities in the country. We have seen it in JNU; we have seen it in Hyderabad and now it is the turn of Allahabad University. Everywhere University Authority's office is being made instrumental to bring police inside the campus and beat the students to curb their peaceful, collective constitutional activities. If this is not an onslaught on democracy, then what else is it? The latest event is of Allahabad University on 2nd of May. The issue was that this University Authority in a most arbitrary manner made only online registration compulsory for entrance examination in the University despite the fact that in all other Central Universities there is a provision for both online and off-line application. The VC is even refusing to give an audience to the democratically elected leadership of the Allahabad University Students' Union. Instead, through his OSD, he is threatening the President of the Union, Miss Richa Singh, and also other office bearers, of dire consequences. In this kind of a situation, and since there is

† Transliteration in Urdu script.